ॐ

पालीवाल सेवा मंडल

नागपुर

(स्थापना-१५ अगस्त, १९६१ – रजि. नं. इ. ३३७ (N) ६५)

*

३१ मार्च, १९७८ को समाप्त होनेवाले वर्ष का

आय-व्यय लेखा

तथा

वार्षिक विवरण

-: कार्यालय :-

३८३, पं. जवाहरलाल नेहरू मार्ग
पटवर्धन हायस्कूल के सामने, सीताबर्डी, नागपुर-४४००१२.

पालीवाल सेवा मंडल, नागपुर

कार्यकारिणी समिति

वर्ष १९७७-७८; ७८-७९

अध्यक्ष	–	श्री मुंशीलालजी शर्मा, नागपुर.
उपाध्यक्ष	–	श्री आईदानजी पुनंद, सिंदी.
उपाध्यक्षा	–	श्रीमती गीतादेवी कुलधर, तुमसर.
मंत्री	–	श्री शिवनारायणजी धामट, अरजुनी (मोरगांव)
उपमंत्री	–	श्री रघुनन्दनजी धामट, नागपुर.
छात्र उपमंत्री	–	श्री जयनारायणजी धामट, नागपुर.
कोषाध्यक्ष	–	श्री शरद कुमारजी छिरक, नागपुर.
उपकोषाध्यक्ष	–	श्री पं. किशोरीलालजी हरजाल, नागपुर.

सदस्य

श्री टीकारामजी धामट, सिंदी
श्री रामनारायणजी कुलधर, नागपुर
श्री मोहनलालजी ठोमा, काटोल
श्रीमती सुशीलाबाई छिरक, नागपुर
श्री सोमराजजी पुनंद, कोंढाली.
श्री राधाकृष्णजी कुलधर, तुमसर
श्री विजयकुमारजी धामट, नागपुर
श्रीमती कृष्णादेवी धामट नागपुर
श्री प्रेमराजजी धामट, आर्वी-पुलगांव
डॉ. पृथ्वीराजजी धामट, नागपुर
श्री रतनलालजी जगिया, गुमगांव-आर्वी.

पालीवाल सेवा मंडल, नागपुर

R. N. E. 337 (N)

सचिव,
शिवनारायण पालीवाल,
अजुंनी मोरगाँव,
भंडारा

कार्यालय :-
पालीवाल सेवा मंडल भवन,
३८३, पं. जवाहरलाल नेहरु मार्ग,
पटवर्धन हायस्कूल के सामने,
सीताबर्डी, नागपुर-४४००१२.
दिनांक २०-१०-१९७८

* १६ वीं वार्षिक सर्वसाधारण सभा की सूचना *

श्रीमान /श्रीमती .....

मान्यवर महोदय /महोदया,

पालीवाल सेवा मंडल, नागपूर की १६ वीं वार्षिक सर्वसाधारण सभा दिनांक १९-११-१९७८ दिन रविवार समय २ बजे दोपहर मंडल के कार्यालय में होगी । अत: आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है ।

वार्षिक सर्व साधारण सभा में निम्नलिखित विषयों पर विचार विमर्श होगा :-

१. पिछली वार्षिक साधारण सभा के विवरण को स्वीकृति प्रदान करना ।
२. ३१ मार्च, १९७८ को समाप्त होने वाले वर्ष के आय-व्यय लेखा को स्वीकृति प्रदान करना ।
३. सचिव द्वारा वार्षिक विवरण पठन ।
४. समाज के छात्रों को अधिकाधिक छात्रवृत्ति दी जा सके, तदर्थ छात्रवृत्ति कोष में अभिवृध्दि के लिये कार्यवाही की रुपरेखा तैयार करना ।
५. अखिल भारतीय पालीवाल ब्राह्मण संघ के लिये नये प्रतिनिधियों का वर्ष १९७९-१९८० के लिये चयन करना ।
६. छात्रावास-भवन मे छात्रों व अन्य सामाजिक कार्यों के लिये पानी की पूर्ति पर्याप्त मात्रा में नहीं हो पाती । इस असुविधा को दूर करने के लिये विचार-विमर्श करना ।
७. अध्यक्ष की अनुमति से अन्य विषय ।

कार्यकारिणी समिति के आदेशानुसार
मंत्री
शिवनारायण पालीवाल
पालीवाल सेवा मंडल, नागपुर.

पालीवाल सेवा मंडल, नागपुर

Reg. No. E. 337 (N)

३१ मार्च, १९७८ को समाप्त होने वाले वर्ष का विवरण

मान्यवर महोदय /महोदया,

हमें इस बात का हर्ष है कि हम आप महानुभावों के समक्ष ३१ मार्च, १९७८ को समाप्त होने वाले वर्ष का आय-व्यय लेखा एवं विवरण, प्रस्तुत कर रहे हैं।

पालीवाल भवन-छात्रावास

नागपुर शहर शिक्षा का बड़ा केंद्र है। हमें आशा है कि जागृत पालक एवं छात्र अच्छी शिक्षा प्राप्त करने के लिये, यहाँ की विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश लेंगे और छात्रावास में रहकर अपना अध्ययन पूर्ण करेंगे ताकि वे भविष्य में कुछ बन सकें। प्रथम वर्ष में छात्रावास में रहने वाले छात्रों की संख्या १२ थी जिसमें पालीवाल छात्र ६ थे। सत्र १९७८-७९ में यह संख्या बढ़कर २१ हो गई है। इसमें भी पालीवाल छात्र ६ हैं। यह हर्ष की बात है कि मंडल के भवन के अधिकांश किरायेदारों ने भवन को खाली कर दिया है। हम आशा करते हैं कि अगले सत्र में अधिकाधिक पालीवाल छात्र, अपने समाज के इस छात्रावास में रहकर शिक्षा प्राप्त करेंगे।

छात्रावास की संपूर्ण व्यवस्था छात्रोपयोगी बनाने के लिये हम प्रयत्नरत हैं। कुछ दान दाताओं ने लोहे के पलंग देकर छात्रों का हित साधा है। हमारे पास पूंजी की कमी है अतः पर्याप्त फर्नीचर अभी तक नहीं खरीद सके हैं। छात्रावास में ट्यूब लाइटस, पलंग टेबल, कुर्सी, अलमारी आदि की अभी बड़ी आवश्यकता है। हमारी योजना है कि जो भी जातीय दानदाता उपर्युक्त में से जो कुछ भी दान में देगा, हम उस पर-- 'श्री ..... की ओर से पा. स. मं को प्रदत्त लिखवाकर स्वीकार करेंगे और उसके मूल्यांकन की पावती देंगे। आशा है हमारे बंधु इस काम में अवश्य आगे आकर छात्रावास को पूर्ण साधन संपन्न बनाने में सहयोग देंगे।

अतिथि कक्ष-

इस शहर में आने या शहर से आने-जाने का काम कई बंधुओं को पड़ता है। धर्मशाला या हॉटेल आदि में रुकने पर खर्च अधिक आता है। यह छात्रावास व्यवसायिक क्षेत्र में स्थित है। नागपुर रेल्वे स्टेशन या बस स्टैंड से पैदल १०-१५ मिनट का रास्ता है। रिक्शे से १० मिनट में पहुँचा जा सकता है। इन सब बातों का ध्यान रखते हुए, जातीय आगंतुकों के लिये पूर्ण स्वतंत्र एवं प्राइवेट सरीखा एक अलग अतिथि कक्ष तैयार कर लिया गया। यह हमारे बंधुओं के लिये सदैव खुला है। आशा है अब नागपुर आने-जाने वाले महानुभाव इसका उपयोग करेंगे।

छात्रवृत्ति-

वर्ष १९७७-७८ के लिये १० होनहार छात्रों को २१०० रु. (दो हजार एक सौ रुपये) छात्रवृत्ति दी गई है।

छात्रवृत्ति कोष-

अभी तक इस कोष में केवल रु. ११००३ ही प्राप्त हुए हैं। यह राशि अधिकोष में स्थायी रूप से सावधि निक्षेप (Fixed Deposit) खाते में जमा है। इसे कभी भी निकाला नहीं जायेगा। दो वर्ष के पहले आपके मंडल ने एक नई योजना सबके सामने रखी थी। उस-योजना के अंतर्गत यह संकल्प किया गया था कि यथाशीघ्र इस छात्रवृत्ति कोष के लिये एक लाख रुपया जमा किया जायेगा। इस कोष में दान देने वाले दानदाताओं को कम से कम एक हजार रुपया जमा करना पड़ेगा। यह राशि सदैव के लिये छात्रवृत्ति कोष में सावधि निक्षेप (Fixed Deposit) में जमा रहेगी। इस राशि पर प्राप्त होने वाले वार्षिक ब्याज से, जरूरत मंद छात्रों को छात्रावृत्ति दी

जायेंगी । खेद है कि अभी तक मंडल को विशेष सफलता नहीं मिली क्योंकि कोई दानदाता स्वयंस्फूर्ति से आगे नहीं आये । निकट भविष्य में कार्यकारिणी के सदस्य इस पुनीत कार्य में सक्रीय होकर यथासाध्य प्रयत्न करेंगे; क्योंकि हमारा उद्देश्य है :-

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनं ।
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः ।।
विद्या बंधुजनों विदेश गमने विद्या परं दैवतं ।
विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं विद्या विहीनः पशुः ।।

परिचायिका-

बहु प्रतिक्षित "पालीवाल परिचायिका" येन केन प्रकारेण प्रकाशित हो चुका है । परिचायिका में आये हुए परिवारों व सदस्यों को इसकी प्रतियाँ निःशुल्क भेजी जा चुकी है । जिन्हें न मिली हो वे कृपया हमें सूचित करें । परिचायिका की अतिरिक्त प्रति यदि किसी महानुभाव को चाहिये तो कम से कम रु. २५ दान स्वरूप भेजकर प्राप्त कर सकते हैं ।

बरतन भांडार-

अब धीरे-धीरे हमारा बरतन भंडार भी समृद्ध होता जा रहा है क्योंकि इसके लिये महिलाओं ने सक्रीय सहयोग देकर लगभग सात हजार रुपये एकत्र कर लिये है । हम आशा करते है कि समाज की जागरूक महिलाएं इसमें अपनी ओर से भविष्य में और भी अधिक प्रेरणास्पद कार्य कर दिखाएंगी ।

अतिथि सत्कार-

सेवा मंडल ने ता. ११-१-१९७८ को आगरा के लोक प्रिय मजदूर नेता एवं फारवार्ड ब्लाक के सचिव तथा सक्रीय राजनीतिज्ञ श्री प्रेमदत्त जी पालीवाल का, उनके नागपुर आगमन पर स्वागत किया । हमारे समाज के इने-गिने सफल राजनितिज्ञों में से प्रेमदत्तजी भी एक हैं । उन्होंने हमारा मार्ग-दर्शन करते हुए बताया कि "पालीवाल आगे इसलिये बढ़ रहे हैं कि उनमें निर्भीकता एवं आगे बढने की लालसा है । यह हमारी परंपरा है जो धरोहर के रूप में हमें प्राप्त है । हाँ ! हम में कुछ अहंमन्यता है , यह एक दुर्गुण है किंतु आवश्यक भी है । यह गुण तामस कहलाता है और स्वतः उनमें आ जाता है जो त्यागी, कर्तव्यपरायण उद्योगी एवं विद्वान हैं । इसी गुण के कारण कई, जातीय बंधु आज पीछे रह गये हैं । यदि यह न होता तो आज हमारे कई बंधु बडे बडे नेता बन जाते । आज समय की पुकार है कि हम कुछ विनम्र बनें । हममें अनेकों अच्छे गुण हैं, अब विनम्रता को भी स्थान देना चाहिये । हम हैं तो बहुत ही अल्प संख्या में किंतु जो भी जहां भी हैं, उसने अपने बलबूते पर अपना महत्व-पूर्ण स्थान बना लिया है । प्रथम स्थान पर विद्या दान है और श्रमदान दूसरे स्थान पर आता है । सूरज अपने आप में अकेला विचरता है. ऋषि और विद्वान् भी अकेले ही होते हैं । कार्यकर्ता भी कम ही होते हैं लेकिन जो होते है वे महान होते हैं । आप लोग भी महान हैं जो समाज के उत्थान के लिये कुछ कर रहे हैं ।"

विवाह आदि सामाजिक कार्य के लिये उपयुक्त स्थल :-

छात्रावास भवन खाली रहने पर या छात्रों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए जो भी शादी-विवाह के सावे होते हैं, यह भवन समाज द्वारा और अन्य समाजों द्वारा, उपयोग में लिया जाता है । वर्ष १९७७-७८ में इसे लडके और लडकी, दोनों पक्ष वाले ने एक साथ लेकर, वैवाहिक कार्यक्रम पूर्ण किये । अग्रिम सूचना मिलने पर समाज हित के कार्यक्रमों एवं शादी-विवाह के लिये इसे आरक्षित कर लिया जाता है । समाज के जो बंधु तदर्थ इसका उपयोग करना चाहें वे अध्यक्ष से संपर्क स्थापित कर सकते हैं ।

समाज की उन्नति, आपकी उन्नति है ।

पालीवाल सेवा मंडळ, नागपुर

रजिस्ट्रेशन संख्या ई. ३३७ (एन.

स्थिति विवरण

३१ मार्च १९७८

पूंजी एवं दायित्व

पूंजी		
पिछले साल तक प्राप्ति	३३,९७०–५९	
जमा इस सालमे प्राप्त	५०३–००	३४,४७३–५९
भवन पूंजी		
पिछले साल तक प्राप्ति	९६,६६८–००	
जमा इस साल मे प्राप्त	२३२–००	९६,९००–००
छात्रवृत्ती पूंजी		
पिछले साल तक प्राप्ति	१०,००२–००	
जमा इस साल में प्राप्त	१,००१–००	११,००३–००
बर्तन पूंजी		
पिछले साल तक प्राप्ति	७३४९–००	
जमा इस साल मे प्राप्त	५५–००	७,४०४–००
अग्रिम एवं जमा बाकी		
मे. मल्लूराम मेहाडिया	४६–५०	
मे. टावरी इलेक्ट्रीकल कं.	६६९–६९	
श्री रघुदेव बिजलीवाला	६०९–५०	
छात्रावास अग्रिम	४२–००	१,३६७–६९
छात्रावास अग्रिम परिचायिका खाता		
पिछले साल तक प्राप्ति (विज्ञापन)	१०,३६०–००	
जमा इस साल मे प्राप्त	६,९१२–००	
	१७,२७२–००	
घटाया साल में किया खर्च	२,४२०–२०	१४,८५१–८०
योग रुपया		१,६६,०००–०८

उपरोक्त स्थिति विवरण मेरे विश्वासानुसार, ट्रस्ट की पूंजी एवं दायित्वों तथा सम्पत्तियों की सत्यता प्रस्तुत करता है।

सचिव,

सम्पत्तियां

भवन		
पिछले साल तक	१,३६,३७८–००	
घटाया घसारा २½%	३,४०९–४५	१,३२,९६८-५५
फर्नीचर एवं फिक्सचर		
पिछले साल तक	६२६–००	
घटाया घसारा १०%	६२–६०	५६३–४०
बर्तन		
पिछले साल तक	१,३२०–००	
जमा इस साल में आये	५५–००	
	१,३७५–००	
घटाया घसारा २०%	२७५–००	१,१००–००
डेडस्टाक		
पिछले साल तक	४५०–००	
घटाया घसारा १०%	४५-००	४०५–००
अग्रिम एवं जमा		
एम. एस. ई. बी. जमा		५५०–००
अपूर्ण कार्य		
बिजली फिटिंग		१,६७४–५०
नगद एवं बैंक बाकियाँ		
नगद, रोकड के मुताबिक	३५१–६५	
सैंट्रल बॅंक ऑफ इण्डिया सेविंग खाता	१,६५९–४१	
सैंट्रल बॅंक ऑफ इण्डिया छात्रवृत्ति खाता	६४४–३३	
सैंट्रल बॅंक ऑफ इण्डिया फिक्स् डिपाझिट	५,०००–००	
सैंट्रल बॅंक ऑफ इण्डिया फिक्स् डिपाझिट छात्रवृत्ति	११,००३–००	१८,६५८–३९
आय एवं व्यय खाता		
पिछले साल तक	१,४७२–८४	
जमा व्यय का आयपर अधिक्य	८,६०७–४०	१०,०८०–२४
योग रुपया		१,६६,०००–०८

संलग्न रिपोर्ट के अनुसार

नागपूर,
३ अक्टूबर, '७८

लोया बागडी एण्ड कं. चार्टर्डएकाउण्टेंटस्
(गोपालदास बागडी पार्टनर)

पालीवाल सेवा मंडल, नागपुर रजिस्ट्रेशन संख्या ई. ३३७ (एन)

आय तथा व्यय खाता

३१ मार्च, १९७८ वर्ष के लिए

खर्च			आय		
सम्पत्तियोंसे सम्बन्धित खर्च			**ब्याज**		
पाणी टैक्स	२३३–७५		सेविंग खाता	५०२–०९	
नगरपालिका टैक्स	७२८–०६		फिक्सड डिपॉझिट	५००–००	
भवन मरम्मत	६,९८०–२३	७,९४२–०४	एम. आई. डी. आर.	१०४८–३०	२,०५०–३९
संस्थापन व्यय			**चन्दा**		
स्टेशनरी एवं प्रिंटिंग	३२६–६५		साधारण सदस्यता चन्दा		१७०–००
डाक	१४५–२०		**किराया**		
आडिट शुल्क	२५–००		मकान किराया		१,६१६–००
ऑफिस खर्च	२२४–८०		**दान प्राप्ति**		
बैंक कमिशन	१३–५०		औसर	४७१–००	
वेतन	९००–००		दान	७०९–००	१,१८०–००
विज्ञापन	१००–००		**अन्य प्राप्ति**		
बिजली खर्च	२४७–५५	१,९८२–७०	बर्तन किराया एवं बिजली आदि		३०४–००
ट्रस्ट उद्देशपर खर्च			**छात्रावास प्राप्ति**		
छात्रवृत्ति			छात्रावास प्राप्ति		१,७६४–००
छात्रों को दिया गया	२१००–००		व्यय का आय का आधिक्य		८,६०७–४०
घटाया-वापस प्राप्त	१२५–००	१,९७५–००			
सारा					
भवन	३४०९–४५				
फर्नीचर एवं फिक्सचर	६२–६०				
बर्तन	२७५–००				
डेड स्टॉक	४५–००	३,७९२–०५			
	योग	१५,६९१–७९		योग	१५,६९१–७९

संलग्न रिपोर्ट के अनुसार
लोया बागडी एण्ड कं.
चार्टर्डएकाउण्टेंटस्
(गोपालदास बागडी)
पार्टनर

नागपूर,
३ अक्टूबर '७८

पालीवाल सेवा मंडल, नागपुर

रजिस्ट्रेशन संख्या ई ३३७ (एन्)

३८३ पं. जवाहरलाल नेहरु मार्ग

पटवर्धन हायस्कूल के सामने

सीताबर्डी, नागपूर ४४००१२

(Under Certificate of Posting)

Book Post

श्रीमान /श्रीमती _____

_____

_____